07-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - अब तक जो कुछ पढ़ा है, उसे भूल एक बाप को याद करो"

None but Only One

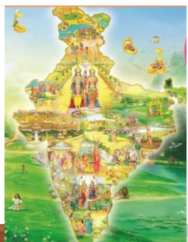

प्रश्नः-भारत पर सतयुगी स्वराज्य स्थापन करने के लिए कौनसा बल चाहिए?

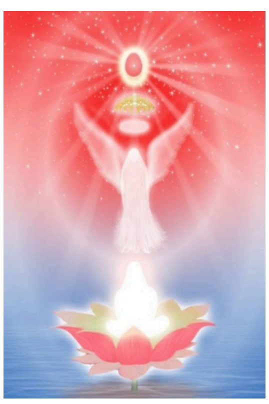

उत्तरः-पवित्रता का बल। तुम सर्वशक्तिवान बाप से योग लगाकर पवित्र बनते हो। यह पवित्रता का ही बल है जिससे सतयुगी स्वराज्य की स्थापना होती है, इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। ज्ञान और योगबल ही पावन दुनिया का मालिक बना देता है। इसी बल से एक मत की स्थापना हो जाती है।

गीतः आखिर वह दिन आया आज... Click

आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज आखिर
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

आज मेरे घर आशा आई
आज हुई मेरी सुनवाई
आज मेरे घर आशा आई
आज हुई मेरी सुनवाई
आज मेरा हाथ आ कर पकड़ा
आज मेरा हाथ आ कर पकड़ा
आप ग़रीब नवाज़
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

जिनके मन में नेक इरादे
उनकी मुश्किल दूर हटा दे हाँ
जिनके मन में नेक इरादे
उनकी मुश्किल दूर हटा दे हाँ
तेरे घर में क्या मुश्किल है
तेरे घर में क्या मुश्किल है
सुन ओ राजाधिराज
तेरे घर में क्या मुश्किल है
सुन ओ राजाधिराज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

07-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। यह गीत कोई अपना बनाया हुआ नहीं है। जैसे और वेदों शास्त्रों का सार समझाया जा रहा है। वैसे यह भी जो गीत बनाये हैं, उनका भी सार समझाते हैं। बच्चे जानते हैं कि खिवैया वा बागवान वा सद्गति दाता एक ही बाप है। भक्ति करते हैं जीवनमुक्ति के लिए। परन्तु जीवनमुक्ति वा सद्गति दाता एक भगवान है।

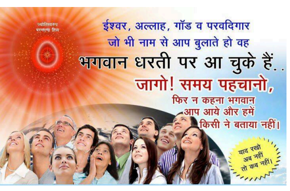

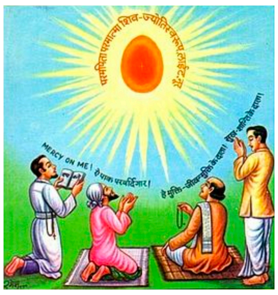

How lucky and Great we are...!

उसका अर्थ बच्चे ही समझ सकते हैं, मनुष्य नहीं समझते हैं।

Definition of

सद्गति अर्थात् दु:ख से छुड़ाकर शान्ति की प्राप्ति कराते हैं। भारतवासी बच्चे जानते हैं कि यहाँ पवित्रता सुख शान्ति थी, जबकि इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। राधे-कृष्ण का राज्य नहीं कह सकते। वास्तव में माताओं की हमजिन्स राधे है। उनको जास्ती प्यार करना चाहिए फिर भी श्रीकृष्ण को बहुत प्यार करते हैं। झूले में झुलाते हैं। श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी भी मनाते हैं। राधे की जयन्ती नहीं मनाते हैं। वास्तव में मनाना चाहिए दोनों का।

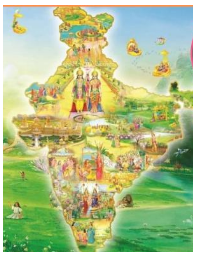

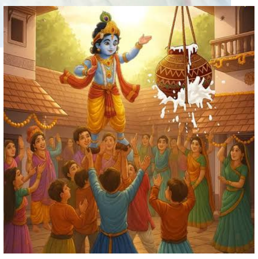

Almighty authority
Only God can say this...

समझ तो कुछ है नहीं। उन्हों की जीवन कहानी को तो कोई जानते नहीं। बाप आकर अपनी और सबकी जीवन कहानी सुनाते हैं।

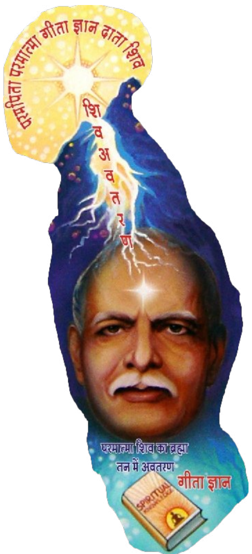

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

मनुष्य कहते भी हैं शिव परमात्मा नम: परन्तु उनकी जीवन कहानी को नहीं जानते। मनुष्य की जीवन कहानी को हिस्ट्री-जॉग्राफी कहा जाता है, दुनिया की हिस्ट्री-जॉग्राफी तो गाई जाती है ना - कितने इलाके पर राज्य करते थे, कितनी जमीन पर राज्य करते थे। कैसे राज्य किया फिर वह कहाँ गये..... यह बातें कोई नहीं जानते। तुम बच्चों को अच्छी रीति समझाया जाता है। रचयिता और रचना की नॉलेज बच्चों को समझाते हैं। तुम बच्चों को मालूम पड़ गया है कि बरोबर अब कलियुग का अन्त है और सतयुग का आदि है। संगम पर ही परमपिता परमात्मा आकर मनुष्य को पतित से पावन देवता बनाते हैं। उत्तम पुरुष अथवा पुरुषोत्तम बनाते हैं क्योंकि इस समय के मनुष्य उत्तम नहीं हैं, कनिष्ट हैं। उत्तम, मध्यम, कनिष्ट, सतो रजो तमो होते हैं। जो अच्छी तरह ज्ञान सुनेंगे उनको सतोगुणी कहेंगे, जो थोड़ा सुनेंगे उनको रजोगुणी कहेंगे, जो सुनते ही नहीं उनको तमो-गुणी कहेंगे। पढ़ाई में भी ऐसे होता है। तुम बच्चों को सतोप्रधान पढ़ाई चाहिए इसलिए सतोप्रधान

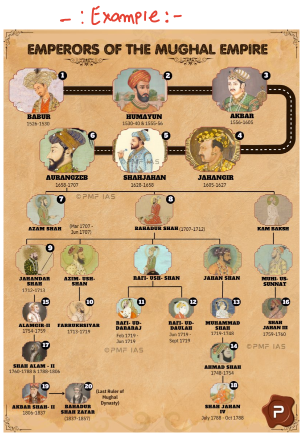

07-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

लक्ष्मी-नारायण बनने का तुमको ज्ञान दिया जाता है। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनना है। गीता के लिए भी तुम कहते हो कि यह है सच्ची गीता। तुम लिख भी सकते हो - यह है सच्ची गीता पाठशाला अर्थात् सत्य नारायण बनने की कथा अथवा सच्ची अमरकथा, सच्ची तीजरी की कथा।

चित्र तो सब तुम्हारे पास हैं, इनमें सारा ज्ञान है। तुम बच्चे अब प्रतिज्ञा करते हो कि हम प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियाँ भारत को सतोप्रधान स्वर्ग बनाकर छोड़ेंगे। तुमको इतला (खबर) करनी है।

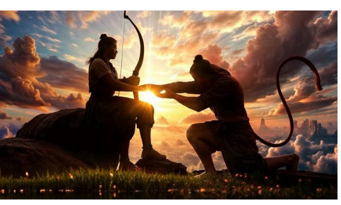

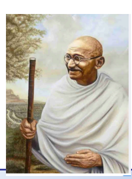

Simple Logic

गांधी जी भी पावन राज्य चाहते थे तो जरूर अब पतित राज्य है। Most imp यह कोई समझ नहीं सकते कि हम खुद पतित हैं। रावण है 5 विकार। कहते हैं राम-राज्य चाहिए तो जरूर आसुरी सम्प्रदाय ठहरे ना, परन्तु यह किसकी बुद्धि में नहीं आता है। कितने बड़े-बड़े गुरू लोग भी इतना नहीं समझते हैं।

Simple Math..

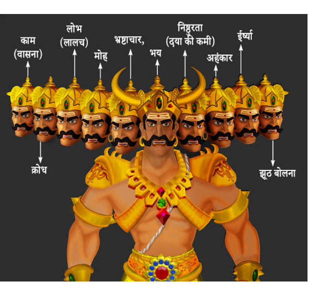

तुम बच्चे इतला करते हो कि हम श्रीमत पर ब्रह्मा द्वारा 5 हजार वर्ष पहले मुआफिक दैवी राज्य स्थापन करेंगे। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग जबकि कनिष्ट पुरुष से सतोप्रधान पुरुषोत्तम बनते

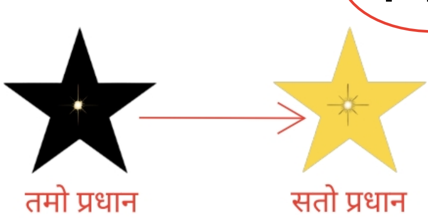

ints: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

हो। मर्यादा पुरुषोत्तम आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही है। अब एक ही देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है फिर दूसरे धर्म होंगे ही नहीं। तुम बच्चे सिद्ध कर समझाते हो कि सतयुग में एक धर्म, एक ही राज्य था। भल त्रेता में सूर्यवंशी से बदल चन्द्रवंशी में जाते है परन्तु होगी एक ही भाषा। अब तो भारत में अनेक भाषायें हैं। बच्चे जानते हैं कि हमारे राज्य में एक ही भाषा थी। आजकल तो बहुत कुछ देखते रहेंगे। जैसे मुसाफिरी से नजदीक आते जाते हैं अपने देश तरफ तो खुश होते हैं कि अब अपने घर आ गये। बस अब जाकर मिलेंगे। तुमको भी अपनी राजधानी का साक्षात्कार होता रहेगा। अपने पुरुषार्थ का भी साक्षात्कार होगा। देखेंगे कि बाबा हमको कितना कहते हैं कि पुरुषार्थ करो। नहीं तो हाय-हाय करेंगे और पद भी कम हो जायेगा। योग की यात्रा सबको बताते रहो। समझाना तो बहुत सहज है। सीढ़ी कितनी सहज है। जो देरी से आते हैं उनको दिन-प्रतिदिन सहज ज्ञान मिलता है। एक हफ्ता समझने से ही सहज समझ जायेंगे। चित्र ऐसे बने हुए हैं, जिनमें एक्यूरेट

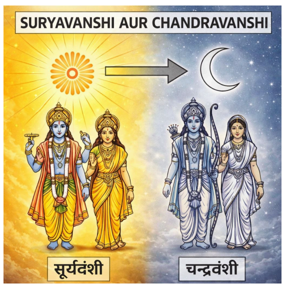

Point to be Noted

Example

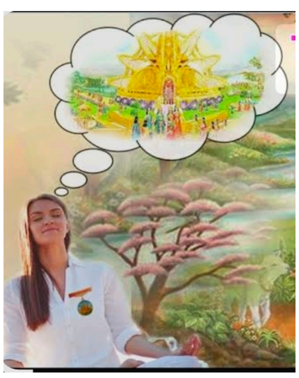

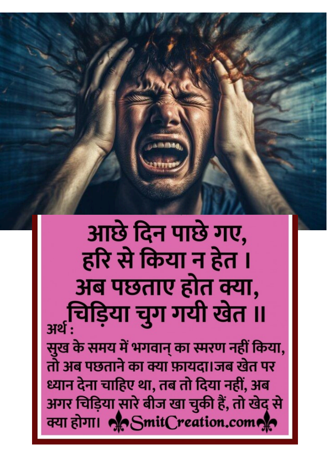

Points: ज्ञान योग M.imp.

For New commers

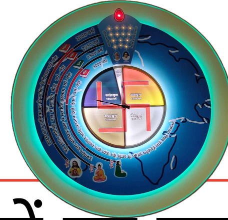

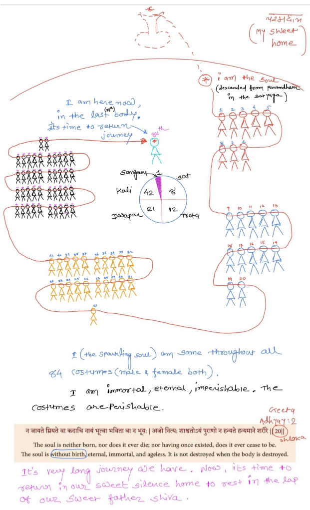

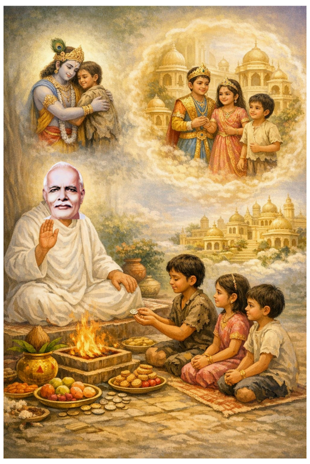

समझानी है। 84 जन्मों का चक्र बिल्कुल ठीक है। यह भारतवासियों के लिए है। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान है। तुम जानते हो कि पतित-पावन, सद्गति दाता शिव-बाबा की मत पर हम फिर से सहज राजयोग बल से, अपने तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग बनाते हैं। दूसरे कोई का हम नहीं लगाते हैं। अपने ही तन-मन-धन से सेवा करते हैं। जितना जो करेंगे वह अपने भविष्य के लिए बनाते हैं। तुम ही घर के भाती हो। तुम्हारे से ही बाबा सतयुगी स्वराज्य स्थापन करा रहे हैं। खर्चा भी तुम ही करेंगे। तुम्हारा कोई जास्ती खर्चा नहीं है। तुमको सिर्फ शिवबाबा को याद करना है, कन्याओं को क्या खर्चा करना है। उनके पास कुछ है क्या? बाबा बच्चों से क्या फी लेंगे। कुछ भी नहीं। स्कूलों में तो पहले फीस की बात करते हैं। वहाँ कितना पढ़ाई में खर्चा होता है। यहाँ तो शिवबाबा बच्चों से कैसे पैसा लेंगे। शिवबाबा को अपना घर थोड़ेही बनाना है, जो पैसा लेंगे। तुम बच्चों को भविष्य स्वर्ग में जाकर हीरे जवाहरों के महल बनाने हैं इसलिए तुम यहाँ जो करते हो उसका रिटर्न

Point to be Noted

ये पक्का समझ लो..

चढ़ाओ नशा...

Mind very well...

जग ने जिनको ठुकराया, पद दलित किया भटकाया
तुमने उन्ही के हाथों इस जग को स्वर्ग को बनाया
ईश मिलन के प्यासों को बाबा तुम खुद आन मिले
बाबा तेरी यादों के दीप हमेशा रहेंगे जले...

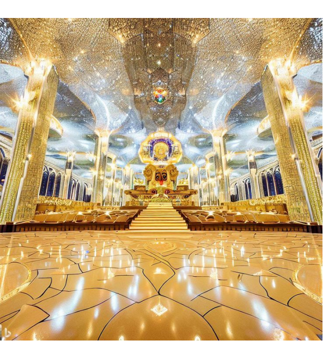

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Simple Math..

07-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

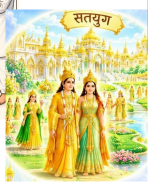

भविष्य में तुमको महल मिल जाता है। यह बड़ी समझने की बातें हैं। जितना जो तन-मन-धन से सेवा करेंगे, वह ऐसा वहाँ पायेंगे। कॉलेज वा हॉस्पिटल बनाते हैं। 10 लाख, 20 लाख लगाने पड़ते हैं। यहाँ तो इतना खर्चा नहीं लगता। छोटे से मकान में रूहानी कॉलेज कम हॉस्पिटल बनाते हैं। पाण्डवों का आदि पति कौन था? उन्होंने तो श्रीकृष्ण का नाम लिख दिया है। वास्तव में है निराकार भगवान। तुमको श्रीमत देने वाला भगवान है। बाकी तो सब हैं रावण की मत पर, रावण राज्य में। रावण की मत पर कितने डर्टी बन पड़े हैं। अब यही सृष्टि पुरानी, वही नई बनती है। सृष्टि में भारत ही था। भारत नया, भारत पुराना कहेंगे। नया भारत तो स्वर्ग था। फिर भारत पुराना है तो नर्क है। इनको कहा जाता है रौरव नर्क। मनुष्य की ही बात है। यहाँ सुख का नाम निशान नहीं है। यह कोई सुख थोड़ेही है। संन्यासी भी कहते हैं, इस समय का सुख काग विष्टा समान है, इसलिए वह गृहस्थ व्यवहार को छोड़ देते हैं। वह स्वर्ग वा सतयुग की स्थापना कर न सकें।

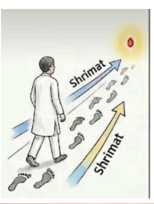

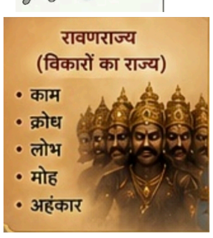

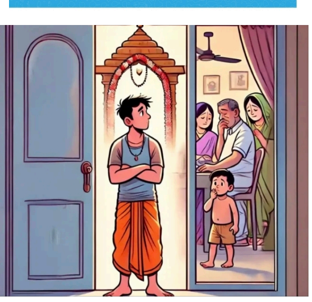

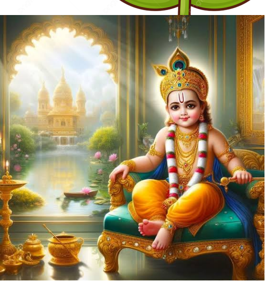

Choice is All yours...

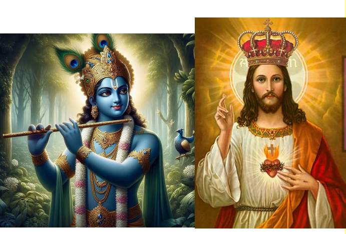

श्रीकृष्णपुरी तो परमात्मा ही स्थापन करते हैं। श्रीकृष्ण की आत्मा और शरीर दोनों सतोप्रधान थे (समझा?) इसलिए श्रीकृष्ण को बहुत प्यार करते हैं क्योंकि पवित्र है ना। गाया भी जाता है छोटा बच्चा ब्रह्म ज्ञानी समान है। छोटे बच्चों को विकारों का पता नहीं रहता। संन्यासियों को फिर भी पता है। बच्चा तो जन्म से ही महात्मा है। बच्चों को तो पवित्र फूल कहा जाता है। नम्बरवन फूल है श्रीकृष्ण। स्वर्ग नई दुनिया का पहला प्रिन्स। जन्म लिया तो कहेंगे फर्स्ट प्रिन्स। श्रीकृष्ण को तो सब याद करते हैं कि श्रीकृष्ण जैसा बच्चा मिले। अब बाप कहते हैं कि जो बनना है सो बनो। सिर्फ एक श्रीकृष्ण थोड़ेही बनता है। प्रिन्स ऑफ वेल्स कितने बनते हैं? सेकेण्ड थर्ड होते हैं ना। तो यहाँ भी डिनायस्टी है। बाप के पिछाड़ी फिर दूसरे गद्दी पर बैठेंगे। जैसे घराने होते हैं वैसे यह घराना है। तुम्हारा कनेक्शन ही क्रिश्चियन से है। श्रीकृष्ण और क्रिश्चियन दोनों की एक ही राशि है। लेन-देन भी आपस में बहुत चलती है। भारत से वह कितना धन ले गये हैं। अब फिर दे रहे हैं। रिटर्न सर्विस कर रहे हैं। यह यूरोपवासी आपस में लड़कर खत्म हो जायेंगे। इस

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

पर कहानी भी है - दो बिल्ले लड़े, बीच में माखन बन्दर खा गया। यह बात अभी की है। वह आपस में लड़ेंगे और राज्य भाग्य तुमको मिलना है। अब

चढ़ाओ नशा...

तुम बच्चों को अथाह ज्ञान है। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम सब ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं। ऐसे नहीं कि हम गुजराती हैं, हम बंगाली हैं। यह है नहीं। यह मतभेद भी निकल जाना चाहिए। हम एक बाप की सन्तान हैं। ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा की

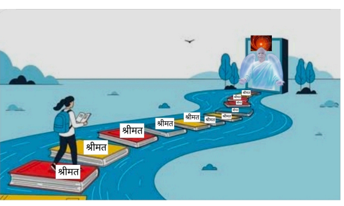

श्रीमत पर फिर से हम अपना स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं - ज्ञान और योगबल से। योग बल से ही हम

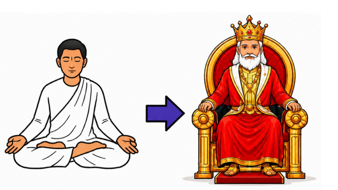

पावन बनते हैं। बाप है सर्वशक्तिमान्, उनसे बल मिलता है। तुम विश्व की बादशाही लेते हो। लड़ाई

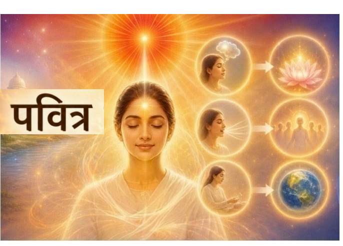

आदि इसमें कुछ नहीं करते हो। सारा पवित्रता का बल है। कहते भी हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ, तो याद का ही बल है। ऐसे नहीं कि वहाँ

उल्टे धन्धे में जाकर सब भूल जाये। यहाँ सम्मुख तो ज्ञान सागर की लहरें देखते रहते हैं। नदियों में तो वह लहरें नहीं होती हैं। सागर की एक लहर

कितना नुकसान कर देती है। जब अर्थ क्वेक होगी तो सागर भी उथल खायेंगे। सागर को सुखाकर

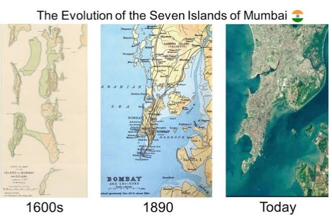

जमीन ली है, वह जमीन फिर कितने दाम में बेचते हैं। तुम जानते हो यह बाम्बे ही नहीं रहेगी। आगे यह बाम्बे थोड़ेही थी, छोटा एक गांवड़ा था। यह मातायें तो भोली हैं। यह इतना लिखी-पढ़ी नहीं हैं। यहाँ तो पढ़ा हुआ सब भूलना है। तुम कुछ नहीं पढ़े हो तो अच्छा है। पढ़े हुए मनुष्य समझने समय कितने प्रश्न करते हैं। यहाँ तो सिर्फ बाप को याद करना है। किसी देहधारी मनुष्य को याद करने की बात नहीं है। महिमा है ही एक बेहद के बाप की। तुम जानते हो कि ऊंचे ते ऊंचा है एक भगवान

ये पक्का समझ लो..

फिर सेकेण्ड नम्बर में ब्रह्मा। उनसे ऊंचा कोई होता नहीं। इससे बड़ी आसामी कोई नहीं, परन्तु चलते देखो कितना साधारण हैं। कैसे साधारण रीति बच्चों से बैठते हैं। ट्रेन में जाते हैं, कोई क्या जाने कि यह कौन हैं! भगवान आकर ज्ञान देते हैं, जरूर प्रवेश कर ज्ञान देंगे ना। अगर श्रीकृष्ण होता तो भीड़ मच जाती फिर तो पढ़ा भी न सके, सिर्फ दर्शन करते रहें। यहाँ तो बाप गुप्त साधारण वेश में बैठ बच्चों को पढ़ाते हैं।

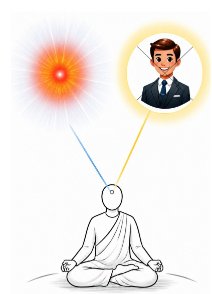

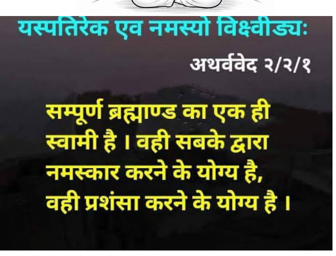

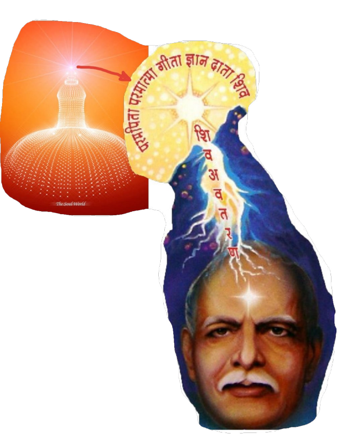

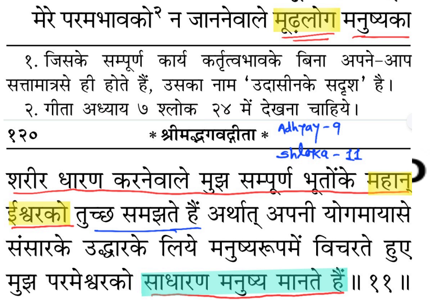
अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥
मेरे परमभावको[2] न जाननेवाले मूढ़लोग मनुष्यका

१. जिसके सम्पूर्ण कार्य कर्तृत्वभावके बिना अपने-आप सत्तामात्रसे ही होते हैं, उसका नाम 'उदासीनके सदृश' है।
२. गीता अध्याय ७ श्लोक २४ में देखना चाहिये।

१२० * श्रीमद्भगवद्गीता * Adhyay - 9 shloka - 11

शरीर धारण करनेवाले मुझ सम्पूर्ण भूतोंके महान् ईश्वरको तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योगमायासे संसारके उद्धारके लिये मनुष्यरूपमें विचरते हुए मुझ परमेश्वरको साधारण मनुष्य मानते हैं॥ ११॥

oints: ज्ञान योग धारण

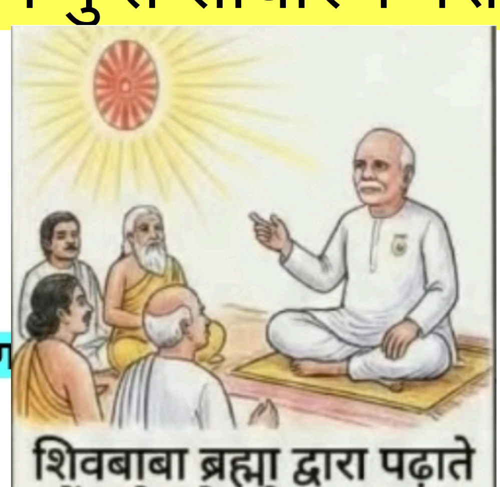

07-08-2026 शान्ति "बापदादा" मधुबन

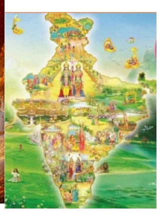

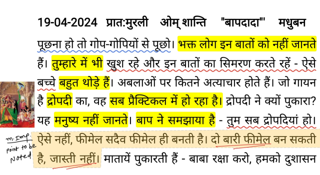
19-04-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो। भक्त लोग इन बातों को नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी खुश रहे और इन बातों का सिमरण करते रहें - ऐसे बच्चे बहुत थोड़े हैं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। जो गायन है द्रोपदी का, वह सब प्रैक्टिकल में हो रहा है। द्रोपदी ने क्यों पुकारा? यह मनुष्य नहीं जानते। बाप ने समझाया है - तुम सब द्रोपदियां हो। ऐसे नहीं, फीमेल सदैव फीमेल ही बनती है। दो बारी फीमेल बन सकती है, जास्ती नहीं। मातायें पुकारती हैं - बाबा रक्षा करो, हमको दुशासन

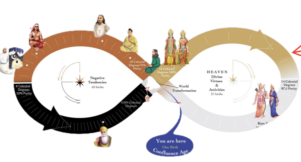
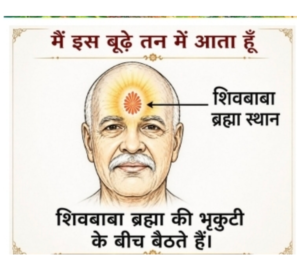

तुम हो इनकागनीटो सेना। तुम जानते हो कि हम आत्मायें योगबल से फिर से अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। यह पुराना शरीर छोड़ जाए नया गोरा शरीर धारण करेंगे। अब है आसुरी सम्प्रदाय फिर बनेंगे दैवी सम्प्रदाय। आत्मा कहती है कि हम नई दुनिया में दैवी शरीर धारण कर जाए राज्य करूँगा। आत्मा मेल है, शरीर प्रकृति है। आत्मा सदैव मेल है। बाकी शरीर हिसाब-किताब से मेल-फीमेल का मिलता है। लेकिन मैं हूँ अविनाशी आत्मा। यह चक्र फिरता रहता है। कलियुग का विनाश भी जरूर होगा। विनाश के आसार भी सामने देखते हो। वही महाभारत लड़ाई है तो जरूर भगवान भी होगा। किस रूप में, किस तन में है वह तुम बच्चों के अलावा किसको पता नहीं। कहते भी हैं - मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं श्रीकृष्ण के तन में नहीं आता हूँ। यही पूरे 84 जन्म लेते हैं। मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में आता हूँ। 84 जन्म सूर्यवंशी घराने वाले ही लेते हैं। वही पहले नम्बर में आयेंगे। साकारी झाड़

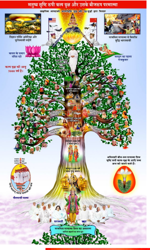

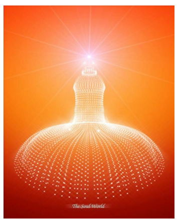

चढ़ाओ नशा...

07-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

और निराकारी झाड़ दोनों का तुमको सारा ज्ञान है। मूलवतन से नम्बरवार आत्मायें आती हैं। पहले-पहले देवी-देवता धर्म की आत्मायें आती हैं फिर नम्बरवार और धर्म वाले आते हैं। चित्रों में समझानी तो बड़ी ऊंची है। बच्चों को समझाना है, कुमारियों को खड़ा होना चाहिए। कोई बच्चियाँ ऐसी-ऐसी बातें समझायें तो कमाल है ना। कितना नाम निकालेंगी। लौकिक अलौकिक दोनों नाम बाला करेंगी। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

19-04-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो। भक्त लोग इन बातों को नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी खुश रहे और इन बातों का सिमरण करते रहें - ऐसे बच्चे बहुत थोड़े हैं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। जो गायन है द्रोपदी का, वह सब प्रैक्टिकल में हो रहा है। द्रोपदी ने क्यों पुकारा? यह मनुष्य नहीं जानते। बाप ने समझाया है - तुम सब द्रोपदियां हो।

m. Imp. point to be Noted

ऐसे नहीं, फीमेल सदैव फीमेल ही बनती है। दो बारी फीमेल बन सकती है, जास्ती नहीं। मातायें पुकारती हैं - बाबा रक्षा करो, हमको दुशासन mp.

07-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) संगमयुग पर श्रेष्ठ कर्म करके पुरुषोत्तम बनना है। कोई भी ऐसा कर्म नहीं करना है जो कनिष्ट बन जाये।

2) गुप्त रूप में बाप का मददगार बन भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है। अपने ही तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग बनाना है। याद और पवित्रता का बल जमा करना है।

Method/Process/Instrument

07-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: अपनी सम्पूर्ण स्टेज द्वारा सर्व प्रकार की अधीनता समाप्त करने वाले प्रकृति जीत भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

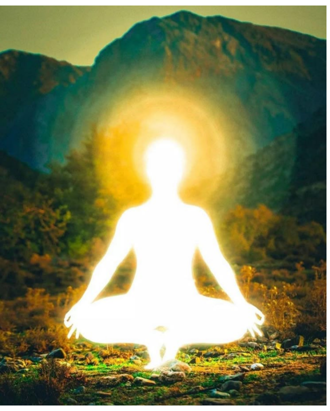

जब आप अपनी सम्पूर्ण स्टेज पर स्थित होंगे तो प्रकृति पर भी विजय अर्थात् अधिकार का अनुभव होगा। सम्पूर्ण स्टेज में किसी भी प्रकार की अधीनता नहीं रहती है।

लेकिन ऐसी सम्पूर्ण स्टेज बनाने के लिए तीन बातें साथ-साथ चाहिए:- 1-रूहानियत, 2-रूहाब और 3-रहमदिल का गुण।

जब यह तीनों बातें प्रत्यक्ष रूप में, स्थिति में, चेहरे वा कर्म में दिखाई दें तब कहेंगे अधिकारी वा प्रकृति जीत आत्मा।

स्लोगन:- श्रीमत की लगाम मजबूत है तो मन रूपी घोड़ा भाग नहीं सकता।

Points: ज्ञान योग

ये अव्यक्त इशारे -

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

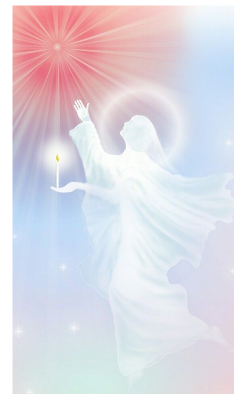

ये पक्का समझ लो..

अगर कोई भी अपवित्रता वृत्ति, स्मृति वा संकल्प में है तो ब्राह्मण-पन की स्थिति में स्थित नहीं हो सकते इसलिए कदम-कदम पर सावधान रहो।

विशेषताओं के साथ अगर कोई एक भी कमजोरी है तो एक कमजोरी अनेक विशेषताओं को समाप्त कर देती है।

समझा?

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26 → Click

All अव्यक्त इशारे July 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

11.6 स्वयं और सेवाकेन्द्र को निर्विघ्न तथा पॉवरफुल बनाने का साधन — मनसा सेवा :

(अ) **तीव्र पुरुषार्थी की विशेषता है ही एवररेडी और आलराउण्डर।** मनसा सेवा का चान्स मिले या वाचा सेवा का चान्स मिले या कर्मणा सेवा का चान्स मिले, लेकिन हर सब्जेक्ट में नम्बर वन। ऐसे नहीं वाचा में नम्बर वन, कर्मणा में नम्बर टू और मनसा में नम्बर थ्री। जितना स्नेह से वाचा सेवा करते हो उतना ही मनसा सेवा भी कर सकें। मनसा सेवा का अभ्यास बढ़ाओ। वाचा सेवा तो 7 दिन के कोर्स वाले प्रवृत्ति वाले भी कर सकते हैं। आप का कार्य है — वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाना। अपने स्थान का, शहर का, भारत का व विश्व का वायुमण्डल पॉवरफुल बनाओ। चेक करो मनसा सेवा में सफलता मिलती है? अगर मनसा सेवा में सफलता होगी, तो सदा स्वयं और सेवाकेन्द्र निर्विघ्न और चढ़ती कला में होगा। **चढ़ती कला यह नहीं कि संख्या वृद्धि को पाये। चढ़ती कला संख्या में भी, क्वालिटी में भी और वायुमण्डल में भी तथा स्वयं**

समझा?

Point to be Noted

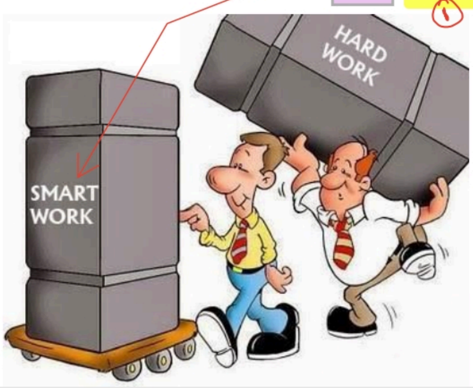

m.m.m....imp. **to understand**

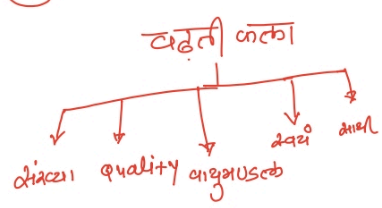

साथियों में भी चढ़ती कला। इसको कहा जाता है 'चढ़ती कला'। तो ऐसे अनुभव करते हो? **अमृतवेला स्वयं का पॉवरफुल है?** ऐसे तो नहीं अमृतवेले में अलबेलापन विघ्न बनता हो? ऐसा पॉवरफुल अमृतवेला है जो विश्व को लाइट और माइट का वरदान दो? अमृतवेले की याद से आप अपने-आप से सन्तुष्ट हो?

पुछो अपने आप से...